दिनांक 8 अगस्त, 2024 को रांची विश्वविद्यालय, रांची द्वारा "विश्व आदिवासी दिवस" के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के मुख्य बिन्दुः-

रउरे मनके जोहार!

आप सभी को मेरा नमस्कार!

 कल "विश्व आदिवासी दिवस" है और मुझे खुशी है कि राँची विश्वविद्यालय द्वारा राँची महिला महाविद्यालय के सहयोग से इस उपलक्ष्य पर आज संयुक्त राष्ट्र संघ के थीम 'Protecting the Rights of Indigenous Peoples in Voluntary Isolation and Initial Contact' पर "जोहार संगी-24" का आयोजन किया जा रहा है। सबसे पहले, मैं आप सभी को "विश्व आदिवासी दिवस" की अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

 प्राकृतिक सौंदर्य से सुशोभित एवं अपार संभावनाओं वाला प्रदेश झारखण्ड के राज्यपाल के रूप में मैंने 31 जुलाई को पदभार ग्रहण किया। राज्य में सार्वजनिक स्तर पर यह मेरा पहला कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में आप सभी के बीच सम्मिलित होकर अभिभूत हूँ। झारखण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का अभिनंदन करता हूँ।

 झारखंड वीरों की भूमि है, जहाँ धरतीआबा बिरसा मुण्डा, बीर बुधु भगत, सिद्धो-कान्हु, चाँद-भैरव, फूलो-झान्हो, जतरा उराँव जैसे महान सपूतों ने अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इन महान सपूतों का जन्म जनजाति समुदाय में हुआ था और उन सभी ने अपने उल्लेखनीय कार्यों से दिखाया कि वीरता और यश के लिए किसी विशिष्ट जाति और कुल की जरूरत नहीं है, बल्कि श्रेष्ठ कर्म की आवश्यकता होती है। इस अवसर पर मैं इन महान सपूतों के प्रति अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं, जिन्होंने हमारी मातृभूमि के लिए संघर्ष किया और अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की।

 हमारे देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा जनजातियों का है और अति प्राचीन काल से ही जनजातीय समुदाय भारतीय सभ्यता और संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। उनकी कला, संस्कृति, लोक साहित्य, परंपरा और रीति-रिवाज की ख्याति विश्व स्तर पर है। जनजातीय गीत और नृत्य अत्यंत मनमोहक होते हैं, जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मुझे गर्व है कि हमारे जनजाति भाई-बहन प्रकृति प्रेमी होते हैं, जिसकी झलक उनके पर्व-त्यौहारों में दिखती है।

 झारखंड राज्य की 3.28 करोड़ से अधिक की आबादी में, जनजातियों की संख्या लगभग 27 प्रतिशत है। राज्य में 32 प्रकार की अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनमें 8 प्रकार के PVTGs भी शामिल हैं। अधिकांश जनजाति लोग गांवों में निवास करते हैं और उनके पास विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की विधा होती है। वे कई प्रकार की व्याधियों के उपचार की औषधीय दवा के सन्दर्भ में जानते हैं।

 अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिए सरकार द्वारा कई कल्याणकारी योजनाएं संचालित हैं। हमारे जनजाति भाई-बहनों को इन योजनाओं के प्रति पूरी तरह से जागरूक होने की आवश्यकता है, ताकि वे इन योजनाओं से पूर्णतः लाभान्वित हो सकें। उन्हें अपनी संस्कृति और भाषा का भी सम्मान करना चाहिए और इसे संरक्षित रखना चाहिए। मुझे यह कहते हुए गौरव हो रहा है जनजाति समाज में दहेज-प्रथा नहीं है, जो एक अनुकरणीय उदाहरण है।

 मैं इस अवसर पर कहना चाहूंगा कि जनजातियों को शिक्षा के प्रति और अधिक जागरूक होने की जरूरत है। ज्ञान किसी भी राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक प्रगति में अहम भूमिका निभाता है। कहते हैं, 'ज्ञान ही शक्ति है'। इसलिए सभी को शिक्षित होना चाहिए, चाहे वो बालक हो या बालिका।

 यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता नहीं है। मेरी इच्छा है कि अधिक से अधिक युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करें और अन्य राज्यों के समक्ष एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करें। वे नैतिकता और आदर्शों को समझें और आज के प्रतियोगी युग में अपना स्थान सुनिश्चित करें।

 सरकार द्वारा जनजातियों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं संचालित हैं। मुझे यह कहते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि जनजाति समुदाय के लोगों में पढ़ाई के प्रति उत्साह में वृद्धि हुई है।

 इतिहास साक्षी है कि जनजातीय समुदाय के कई लोगों ने विपरीत हालात में भी शिक्षा हासिल की है। देश की माननीया राष्ट्रपति महोदया और इस राज्य की पूर्व राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी भी विषम परिस्थितियों में उच्च शिक्षा ग्रहण की तथा अपने गाँव की पहली महिला बनीं, जो कॉलेज गईं। वे सभी बालिकाओं के लिए आदर्श उदाहरण हैं।

 आज हालात बदल चुके हैं और पढ़ाई के लिए पहले से बेहतर माहौल बना हुआ है। ऐसे में अधिक से अधिक लोग उच्च शिक्षा हासिल करें, यह हमारा प्रयास होना चाहिए। साथ ही, जनजातियों को पढ़ाई के लिए दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए और अपने कार्यों से समाज के लिए प्रेरणास्रोत बनकर उभरना चाहिए। जिस प्रकार आज जनजातियों की परंपरा और संस्कृति का पूरे विश्व में उदाहरण दिया जाता है, उसी प्रकार शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में भी उन्हें पिछड़ा न समझा जाए, आदर्श माना जाय।

 एक बार पुनः आप सभी को “विश्व आदिवासी दिवस” की अग्रिम हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द! जय झारखंड!